Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-5* *May 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और महिला विधायकों की भूमिका– 2025 के विधानसभा चुनाव के संदर्भ में

बीरबल कुमार

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, मुंगेर विश्वविद्यालय मुंगेर

डॉ. धीरज कुमार

शोध निदेशक, सहायक प्राध्यापक सह विभागाध्यक्ष, कोशी कॉलेज खगड़िया, मुंगेर विश्वविद्यालय मुंगेर

Article Info: *(Recieved- 18/03/2026, Accept- 12/04/2026, Published- 10/05/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i50015

सारांश–

सृष्टि की उत्पत्ति एवं सभ्यता के विकास में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। पुराणों के अनुसार चाहे धर्म की रक्षा हो या उसकी पुर्नस्थापना इन सभी कार्यो को आदि शक्ति मॉ जगदम्बा ने ही पूर्ण किया है। सीता, सावित्री के धर्मपालन को आज भी आदर्श के रूप में समाज में माना जाता है। रानी लक्ष्मीबाई, मदरटेरेसा के वीरता बलिदान तथा सेवा की मिशालें आज भी हमारे जीवन को एक दिशा प्रदान करती है। हमारा समाज मूल रूप से पुरूष प्रधान रहा है। पहले महिलाओं के पास किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता न होने के कारण उसकी सामाजिक व पारिवारिक स्थिति एक पराश्रित से अधिक नहीं थी। जिसे हर कदम पर एक पुरूष के सहारे की जरूरत होती थी। वैसे तो आजादी के बाद से ही महिला उत्थान के उद्देश्य से विभिन्न प्रयास किये जाते रहें है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में महिला सशक्तिकरण की कार्य में तेजी आयी है। इन्हीं प्रयासों के परिणाम स्वरूप महिलाओं के आत्म विश्वास में बढ़ोत्तरी हुयी है। वे किसी भी चुनौती को स्वीकार करने के लिए खुद को तैयार करने लगी है। एक ओर जहाँ केन्द्र व राज्यों की सरकारें महिला उत्थान की नई–नई योजनायें बनाने लगीं है। वहीं कई गैर सरकारी संगठन भी उनके अधिकारों के लिये उनकी आवाज बुलन्द करने लगें है। महिला में ऐसी प्रबल भावना को उजागर करने का प्रयास भी किया जा रहा है। कि वह अपने अन्दर छिपी की ताकत को सामने लाकर बिना किसी सहारे के आने वाली हर चुनौती का सामना कर सकें।

कुंजी– सृष्टि, पुराण, धर्मपालन, बलिदान, सशक्तीकरण।

प्रस्तावना–

बिहार में महिलाओं को पिछड़ी श्रेणी में माना जाता है। पिछड़े हुए समुदाय में तो और भी पिछड़ा। डॉ. लोहिया के श्रेणीकरण में तो महिलाएं पिछड़ी समुदाय में हैं। वे दलित, अल्पसंख्यक, पिछड़ी और स्त्री जाति को पिछड़ी समुदाय में रखते थे। बिहार जैसे सामंती मानसिकता वाले राज्य में तो महिलाओं को फैसला लेने की आजादी भी नहीं रहती है। ऐसे बिहार में महिलाओं के वोट टर्न आउट का बढ़ जाना बिहार की अनकही कहानी बयां करने के लिए काफी है। वोट का यह छलांग परंपरागत वर्जनाओं से मुक्ति की ओर छलांग की तरह है। श्रीकांत के अनुसार यह सामाजिक सशक्तीकरण की दिशा में बड़ा कदम है।

वोटर टर्न आउट बढ़ाने में लड़कियों को साइकिल और ग्रामीण क्षेत्रों में आंगनबाड़ी, सर्वशिक्षा अभियान और पढ़ाई की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। संभव है कि पिछड़े हुए समाज में जाति निरपेक्ष वोट डालने वाली महिलाओं की संख्या अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ सशक्तीकरण की नई पहचान स्थापित कर दे। यह बिहार की

परंपरागत छवि को नए सिरे से रचने और गढ़ने की ताकत रखता है।

बिहार की राजनीति में महिलाओं की भूमिका हमेशा से ही बहुआयामी रही है। एक ओर जहां महिलाएं मतदाता के रूप में अपनी ताकत दिखा रही हैं, वहीं विधायकों के रूप में उनकी प्रतिनिधित्व अभी भी चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव, जो 6 से 11 नवंबर तक चरणबद्ध तरीके से संपन्न हुए, इसकी मिसाल हैं। इस चुनाव में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने 202 सीटें जीतकर भारी बहुमत हासिल किया, लेकिन महिलाओं का योगदान इसमें निर्णायक साबित हुआ। डब्ल्यू हालांकि, निर्वाचित विधायकों में महिलाओं का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से काफी कम रहा।

बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ रही है, खासकर स्थानीय निकायों में 50% आरक्षण के कारण, जिससे पंचायतों में सकारात्मक बदलाव आ रहे हैं, लेकिन राज्य स्तर पर पितृसत्ता, जातिगत भेदभाव और संसाधनों की कमी जैसी बाधाएँ अभी भी हैं; महिला विधायकों की भूमिका शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है, लेकिन उन्हें समर्थन और नीतियों में सुधार की आवश्यकता है ताकि वे केवल 'प्रॉक्सी' न रहकर वास्तविक नेतृत्वकर्ता बन सकें और सत्ता के शीर्ष पदों तक पहुँच सकें।

2025 के चुनाव में कुल मतदाताओं की संख्या में महिलाओं का हिस्सा 48: से अधिक था, और उनका मतदान प्रतिशत पुरुषों से कहीं ज्यादा रहा। चुनाव आयोग के आंकड़ों के अनुसार, महिलाओं का मतदान प्रतिशत 71. 6% था, जबकि पुरुषों का 62.8%।

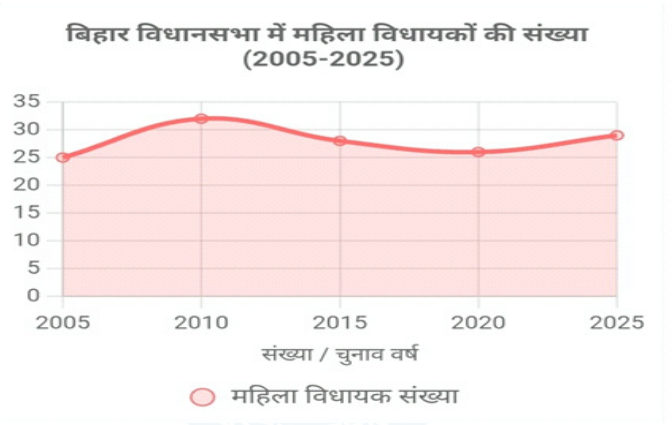

इससे महिलाओं ने पुरुषों से 4.3 लाख अधिक वोट डाले। यह अंतर पिछले 15 वर्षों में सबसे अधिक था। यह 'महिला लहर' एनडीए की जीत का प्रमुख कारण बनी। जनता दल (यूनाइटेड) को विशेष रूप से महिलाओं के वोटों से फायदा हुआ, क्योंकि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की योजनाएं जैसे 'महिला समाहार' और 'कन्या विवाह' जैसी स्कीमें महिलाओं के बीच लोकप्रिय रहीं। एफ कुल 130 विधानसभा क्षेत्रों में महिलाओं के वोट पुरुषों से अधिक पड़े, और इनमें से 88% में एनडीए ने जीत हासिल की।

हालांकि, उच्च मतदान के बावजूद, महिलाओं के उम्मीदवारों की संख्या ऐतिहासिक रूप से कम रही। 2025 में केवल 258 महिलाएं मैदान में उतरीं, जो 15 वर्षों में सबसे कम संख्या है। यह दर्शाता है कि पार्टियां महिलाओं को 'वोट बैंक' तो मानती हैं, लेकिन टिकट वितरण में अभी भी हिचकिचाहट बरतती हैं। बिहार विधानसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व धीरे–धीरे बढ़ा है, लेकिन यह राष्ट्रीय औसत लगभग 14% से कम रहा है। नीचे दिए गए चार्ट में 2005 से 2025 तक के विधानसभा चुनावों में महिला विधायकों की संख्या दिखाई गई है। डेटा एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) और मायनेटा जैसे स्रोतों से लिया गया है।

इस चार्ट से स्पष्ट है कि 2010 में चरम (32 महिलाएं, 13.2%) के बाद संख्या में गिरावट आई, लेकिन 2025 में मामूली सुधार हुआ (29 महिलाएं, 12%)। 2020 में यह 26 (10.7%) था। कुल 243 सीटों में महिलाओं का औसत प्रतिनिधित्व 11% के आसपास रहा, जो पंचायती राज में 50% आरक्षण के विपरीत है।

2025 की 18वीं बिहार विधानसभा में 29 महिला विधायक निर्वाचित हुईं, जो पिछले विधानसभा से 3 अधिक हैं। इनमें से 13 आयु वर्ग 25–39 वर्ष के बीच हैं, जो युवा नेतृत्व का संकेत देता है। हालांकि, 15 के पास कॉलेज डिग्री नहीं है, जो शिक्षा के स्तर पर सवाल उठाता है।

महिला विधायकों ने शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर सक्रिय भूमिका निभाई है।

उदाहरणस्वरूप, नीतीश कुमार सरकार में महिला विधायक प्रीति कुमारी ने बाल विवाह रोकथाम विधेयक को मजबूत करने में योगदान दिया। 2025 चुनाव में विजयी महिलाओं में बीजेपी की मैथिली ठाकुर जैसी नई चेहरे उभरे, जिन्होंने ग्रामीण विकास पर फोकस किया।

फिर भी, चुनौतियां बरकरार हैं। कई महिला विधायक 'प्रॉक्सी' मानी जाती हैं, जहां पुरुष रिश्तेदारों का प्रभाव हावी रहता है। डी कम टिकट और हिंसा/धमकी जैसे कारक उनकी भागीदारी सीमित करते हैं। 33ः महिला आरक्षण विधेयक के पारित होने से उम्मीद है कि भविष्य में सुधार होगा।

2025 बिहार विधानसभा चुनाव (6–11 नवंबर) में कुल 255 महिलाएं उम्मीदवार थीं, जो 15 वर्षों में सबसे कम संख्या है। फिर भी, 29 महिलाएं (12%) जीतीं, जो 2020 के 26 (11%) से थोड़ा बेहतर है। मतदान में महिलाओं की भागीदारी रिकॉर्ड तोड़ी कुल मतदान 66.91% रहा, जिसमें महिलाओं का प्रतिशत पुरुषों से 9% अधिक था। कम से कम 130 विधानसभा क्षेत्रों में महिलाओं ने पुरुषों को पछाड़ा, जहां एनडीए ने 114 जीते।

पार्टी–वार ब्रेकडाउन (महिला विधायक) :

- एनडीएः अधिकांश महिलाएं यहां से जीतीं, खासकर बीजेपी (लगभग 12) और जेडीयू (लगभग 10) से।
- आरजेडीः 5–6 महिलाएं।
- अन्यः एआईएमआईएम और कांग्रेस से 2–3।

महिलाओं की वोटिंग ने नीतीश कुमार की योजनाओं (जैसे मुफ्त बिजली, सिलेंडर सब्सिडी) को मजबूत किया, जिससे एनडीए को 202 सीटें मिलीं।

प्रमुख महिला विधायक और उनके योगदान–

नाम	निर्वाचन क्षेत्र	पार्टी	विशिष्ट योगदान/भूमिका
मैथिली ठाकुर	अलीनगर (दरभंगा)	भाजपा	बिहार की सबसे युवा विधायक। लोकगायिका के रूप में प्रसिद्ध, युवाओं और महिलाओं से जुड़े मुद्दों (शिक्षा, संस्कृति) पर फोकस। मैथिली भाषा और मिथिला संस्कृति को विधानसभा में प्रमुखता दी। शपथ मैथिली में ली।
श्रेयसी सिंह	जमुई	भाजपा	अंतरराष्ट्रीय निशानेबाज। खेल और महिला सशक्तिकरण पर जोर। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं के विकास में योगदान। एनडीए की जीत में महिला वोटों को मजबूत करने वाली प्रमुख चेहरा।
रेणु देवी	बेतिया	भाजपा	पूर्व उपमुख्यमंत्री। महिला कल्याण योजनाओं (जैसे जीविका समूह) के क्रियान्वयन में अनुभव। पश्चिम चंपारण में विकास कार्यों पर सक्रिय।
कोमल सिंह	गायघाट	जदयू	सबसे कम उम्र की विधायकों में से एक। परिवारिक राजनीतिक पृष्ठभूमि (मां सांसद)। प्रचार में बुलेट राइडिंग से चर्चा। युवा महिलाओं के रोजगार और शिक्षा पर फोकस।
रेखा पासवान	सारण	लोजपा	पार्टी की मजबूत स्ट्राइक रेट में योगदान। ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और स्थानीय विकास पर सक्रिय।
गायत्री देवी	परिहार	भाजपा	क्षेत्रीय विकास और महिला मुद्दों पर कार्य।
नीशा सिंह	प्राणपुर	भाजपा	स्थानीय स्तर पर महिला समूहों को मज करने में भूमिका।

समग्र योगदान के क्षेत्र–

- कैबिनेट में प्रतिनिधित्वः नई सरकार में श्रेयसी सिंह, लेशी सिंह और एक अन्य महिला मंत्री शामिल। ये महिला–केंद्रित योजनाओं (जैसे जीविका, सात निश्चय) के बेहतर कार्यान्वयन में भूमिका निभा रही हैं।
- महिला वोटरों का प्रभावः महिला विधायकों ने एनडीए की जीत में अप्रत्यक्ष योगदान दिया, क्योंकि महिलाओं का टर्नआउट पुरुषों से अधिक रहा और नीतीश की योजनाओं ने उन्हें आकर्षित किया।
- युवा नेतृत्वः मैथिली ठाकुर जैसी युवा विधायक संस्कृति, शिक्षा और युवा रोजगार पर नई बहस छेड़ रही हैं।
- विपक्षी भूमिकाः आरजेडी की 3 महिला विधायक (नाम स्पष्ट नहीं, लेकिन सामान्यतः लैंगिक हिंसा और शिक्षा पर सक्रिय) सदन में विपक्षी आवाज उठा रही हैं।

सकारात्मक लोकतंत्र के निर्माण के लिए जरूरी है कि राजनीति में ज़्यादा से ज़्यादा महिलाओं का योगदान हो। क्योंकि महिलाएं गरीबी, समानता और समाज के विकास जैसे मुद्दों को अच्छी तरह समझती हैं और उन्हें हल करने में भी मदद कर सकती हैं। इसलिए उन्हें राजनीति में बराबरी का अवसर मिलना ही चाहिए। हमें उम्मीद है कि अगले बिहार चुनाव में पार्टियां अपनी महिला उम्मीदवारों को अधिक से अधिक अवसर देंगी।

चुनौतियां और आगेः हालांकि संख्या कम है, ये विधायक 33ः महिला आरक्षण बिल की वकालत कर रही हैं। कई 'प्रॉक्सी' नहीं बल्कि स्वतंत्र छवि वाली हैं, जो बिहार की राजनीति में बदलाव का संकेत है। 2025 चुनाव ने साबित किया कि बिहार की महिलाएं राजनीतिक परिवर्तन की धुरी हैं, लेकिन विधायिका में उनकी भूमिका को मजबूत करने के लिए पार्टियों को अधिक टिकट और समर्थन देना होगा। उच्च मतदान महिलाओं की जागरूकता दर्शाता है, लेकिन 12ः प्रतिनिधित्व असमानता को उजागर करता है। यदि यह प्रवृत्ति जारी रही, तो बिहार की राजनीति अधिक समावेशी बनेगी। स्रोतों के अनुसार, अगले चुनावों में महिला आरक्षण का प्रभाव दिखेगा।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. श्रीकांत, राज और समाज, वाणी प्रकाशन, न्यू दिल्ली, 2012, पृ. 23
2. डा. दिलीप कुमार, सामाजिक बदलाव और बिहार, जानकी प्रकाशन, पटना, 2015
3. चेताशी, वर्ष 13, अंक–1, पृ.39 अक्टूबर–दिसम्बर 2016,
4. आशुतोष कुमार, "डेवलापमेंट फोकस एण्ड इलेकट्रोरल सक्सेस पैट द स्टेट लेवल : नीतीश कुमार पैज बिहार्स लीर्डस', साउथ एशिया रिर्सच, वाल्यूम 33, न.2, सेज पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, 2013, पृ. 106–107.
5. अर्णव मुखर्जी एण्ड अंजन मुखर्जी, "सुशासन : गवर्नेस एण्ड द न्यू बिहार", इन एन.के. सिंह (एडीटेड), द न्यू बिहार, पेंनग्यून, न्यू दिल्ली, 2013
6. क्रिसटोफे जेफरलॉट एण्ड जी. वर्नियर, "द रेसिसेंटस ऑफ रिजनलिज्म बीजेपीज् लिमिटेशन्स एण्ड रिसौलियन्स ऑफ स्टेट पॉलिटिक्स", इन पॉल वालास (एडीटेड) इंडियाज 2014 इलेक्शन्स, सेज पबिलकेशन, न्यू दिल्ली, 2014, पृ. 28–45. :
7. अन्ना जुहॉस, "एनालिसिस ऑफ द लेजिसलेटिव एसेम्बली इलेक्शन्स इन बिहार 2015", इंस्टिट्यूट फॉर फॉरेन अफेयर्स एण्ड ट्रेड, ई–2015/45, बुगपेस्ट, 2015
8. कश्मीरा सिंह, 'बिहार में जंगलराज की वापसी", चेतासी, वर्ष 13, अंक–1, अक्टूबर–दिसम्बर 2016, पृ. 16–17
9. सिन्हा, शोभना. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारीः बिहार का एक केस स्टडी। जर्नल ऑफ पब्लिक अफेयर्स, वॉल्यूम। 20, नहीं. 4, 2020, पीपी. ए 2151
10. झा, अरविन्द कुमार। महिला सशक्तिकरण और पंचायती राजः बिहार में एक अध्ययन। जर्नल ऑफ सोशल वेलफेयर एंड मैनेजमेंट, वॉल्यूम। 6, नहीं. 2, 2014, पृ. 131–141.
11. चौधरी, माधुरी और नीतू सिंह। बिहार में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका। जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, वॉल्यूम। 24, नहीं. 1, 2016, पृ. 45–58.
12. महिला जन अधिकार समिति. पंचायती राज संस्थाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरणः बिहार का एक केस स्टडी। मानविकी और सामाजिक विज्ञान के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, वॉल्यूम। 6, नहीं. 8, 2016, पृ. 91–1041
13. पांडे, अनुराग. बिहार में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारीः एक सिंहावलोकन। जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट एंड एग्रीकल्चर, वॉल्यूम । 1, नहीं. 2, 2017, पृ. 37–44.
14. रानी, सुषमा. बिहार में पंचायती राज संस्थानों में महिलाओं का प्रतिनिधित्वः एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड एनालिटिकल रिव्यूज़, वॉल्यूम। 5, नहीं. 3, 2018, पृ. 123–130.
15. वर्मा, रेखा, (2021), मीडिया और महिला सशक्तिकरण : एक विश्लेषण, जनसंचार अध्ययन जर्नल, 10(1), 67–791
16. राष्ट्रीय महिला आयोग, (2020), राजनीति में महिलाओं की भागीदारी पर रिपोर्ट, नई दिल्लीः एनसीडब्ल्यूआई

17. यादव, संगीता, (2016), भारतीय लोकतंत्र में महिला प्रतिनिधित्व. वाराणसीः भारत अध्ययन प्रकाशन।
18. मिश्रा, राजेश, (2018), भारतीय लोकतंत्र और महिला सशक्तिकरण, नई दिल्लीः राधा पब्लिकेशन।
19. शर्मा, सीमा, (2019), बिहार में महिलाओं की चुनावी भागीदारी का समाजशास्त्रीय अध्ययन, समाज और राजनीति, 12(3), 89–1011
20. योजना आयोग (2014), महिला विकास और राजनीतिक भागीदारी पर रिपोर्ट, नई दिल्लीः भारत सरकार।
21. राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, (2020), लैंगिक समानता और लोकतांत्रिक अधिकार, नई दिल्लीः एनएचआरसीआई।

Cite this Article

"बीरबल कुमार; डॉ. धीरज कुमार', 'बिहार में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और महिला विधायकों की भूमिका– 2025 के विधानसभा चुनाव के संदर्भ में", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:5, May 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."